# १ विश्वयुद्धोत्तर राजनीतिक गतिविधियाँ

**चलो, थोड़ी दोहराई करेंगे !**

पिछली कक्षाओं में नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में हमने स्थानीय शासन संस्था, भारत का संविधान और अपने देश की शासन प्रणाली अथवा सरकार की संरचना का अध्ययन किया। इस कक्षा में अब हम भारत के विश्व से होने वाले संबंध देखने वाले हैं। भूगोल के अध्ययन से आपको विश्व की भौगोलिक संरचना समझी होगी। इतिहास के अध्ययन से ऐतिहासिक कालखंड की वैश्विक गतिविधियाँ समझ में आई होंगी। अब हम राजनीति शास्त्र के अध्ययन से भारत और विश्व के बीच के संबंध और महत्त्वपूर्ण वैश्विक समस्याएँ समझेंगे।

हम सभी अलग-अलग कारणों से, सुविधाओं के लिए समाज के व्यक्तियों, संस्थाओं तथा संगठनों पर निर्भर होते हैं। हमारा सामाजिक जीवन एक-दूसरे पर अवलंबित होता है, इसमें एक-दूसरे का परस्पर सहयोग बहुत महत्त्वपूर्ण होता है, यह हमने देखा है। यह जैसा व्यक्ति और समाज के बारे में है उसी तरह विविध राष्ट्रों के बारे में भी है। भारत की तरह विश्व में अनेक स्वतंत्र देश हैं । उनमें निरंतर कुछ-न-कुछ आदान-प्रदान चलता रहता है, व्यवहार होते रहते हैं। ये सभी स्वतंत्र देश एक-दूसरे से अनुबंध भी करते हैं। इन सभी स्वतंत्र तथा प्रभुत्व संपन्न देशों की मिलकर एक व्यवस्था तैयार होती है। हम इसे अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था कहते हैं। इस अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की विशेषताएँ हम समझेंगे।

**परस्परावलंबन :** विश्व के सभी देश किसी न किसी कारणों से एक-दूसरे पर अवलंबित होते हैं। राष्ट्र कितना ही बड़ा, समृद्ध और विकसित क्यों न हो; वह कभी भी सभी बातों में स्वयंपूर्ण नहीं हो सकता। बड़े राष्ट्रों को भी उनके जैसे अन्य बड़े और छोटे राष्ट्रों पर निर्भर रहना पड़ता है। इसलिए परस्परावलंबन अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का अर्थात आज की वैश्विक व्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण वैशिष्ट्य है ।

**मेरी समस्याएँ...**

- व्यक्ति और राष्ट्र के परस्परावलंबन में भला क्या अंतर होता है?
- धनवान देश और निर्धन देश क्या ऐसा कोई विभाजन होता है?
- जैसे देश का प्रशासन संविधान के अनुसार चलता है, वैसे ही क्या वैश्विक स्तर पर कोई संविधान होता है?
- अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में सर्वोच्च स्थान किसे प्राप्त रहता है?

**विदेश नीति द्वारा अंतरराष्ट्रीय संबंध :** प्रत्येक राष्ट्र अपने अंतर्गत व्यवहार के लिए तथा अन्य राष्ट्रों से कैसे व्यवहार करें इस विषय में नीति निर्धारित करता है। ऐसी नीति को विदेश नीति कहते हैं। भारत की विदेश नीति का हम अगले अध्याय में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

**करके देखिए ।**

एक माह के समाचारपत्र संकलित कर उनमें विदेश से संबंधित समाचारों का संकलन कीजिए। निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर उन समाचारों का वर्गीकरण कीजिए तथा उनकी प्रदर्शनी आयोजित करवाएँ।

(अ) विदेश के महत्त्वपूर्ण पदों के व्यक्तियों द्वारा हमारे देश में दी गई भेंट।

(ब) अपने देश और अन्य देशों में हुए अनुबंध।

(क) हमारे देश में आयोजित कोई अंतरराष्ट्रीय परिषद।

(ड) पड़ोसी देशों के संदर्भ में गतिविधियाँ।

**पृष्ठभूमि :** हम आज जिस विश्व में रह रहे हैं, उसने अनेक घटनाओं, गतिविधियों द्‌वारा आकार पाया है। इसीलिए हमें वर्तमान विश्व को समझने के लिए थोड़ा इतिहास में जाना पड़ेगा। पिछली शताब्दी में दो विश्वयुद्‌ध हुए; यह हमें मालूम ही है। ये दो विश्वयुद्‌ध पिछली शताब्दी की सबसे महत्त्वपूर्ण घटनाएँ थीं। उनके कारण विश्व बदला। विश्व में नए प्रवाह, नए विचार आए। इन विश्वयुद्‌धों के कारण और क्या हुआ यह समझ लेंगे।

**प्रथम विश्वयुद्‌ध :** वर्ष १९१४ से १९१८ के बीच प्रथम विश्वयुद्‌ध हुआ। यूरोप महाद्‌वीप के महत्त्वपूर्ण देश इसमें शामिल थे। तत्कालीन अंतरराष्ट्रीय अथवा वैश्विक व्यवस्था में यूरोप को बहुत महत्त्व प्राप्त था। प्रथम विश्वयुद्‌ध में बहुत बड़ी मात्रा में जन तथा धन की हानि हुई। युद्‌ध में सहभागी राष्ट्रों को बड़ा आर्थिक घाटा सहन करना पड़ा। युद्‌ध में सहभागी न होने वालों को भी युद्‌ध की मार सहन करनी पड़ी। विजित तथा पराजित राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था चरमरा गई।

**प्रथम विश्वयुद्‌ध में सहभागी राष्ट्र**

| मित्र राष्ट्र | मध्यगत राष्ट्र |
|---|---|
| ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, इटली, अमेरिका | जर्मनी,ऑस्ट्रिया-हंगेरी, तुर्कमेनिस्तान (तुर्किस्तान), बल्गेरिया |

इस तरह के युद्‌ध पुनः न हों इसके लिए कोई उपाय योजना करनी चाहिए; ऐसा सभी राष्ट्रों को लगने लगा तथा उसी के परिणामस्वरूप राष्ट्रसंघ नामक अंतरराष्ट्रीय संगठन की स्थापना हुई। अंतरराष्ट्रीय समस्या हल करने हेतु चर्चा तथा समझौता करने का यह एक महत्त्वपूर्ण मंच बन गया। राष्ट्रसंघ की मुख्य जिम्मेदारी युद्‌ध टालना मानी गई।

प्रथम विश्वयुद्‌ध समाप्त होने के बाद यूरोप में तथा यूरोप के बाहर भी अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई दिए। जैसे, यूरोप के पूर्वी साम्राज्य ध्वस्त हुए तथा नए राष्ट्र अस्तित्व में आए।

यूरोप के अनेक देशों की अफ्रीका और एशिया महाद्‌वीप में आवासीय बस्तियाँ थीं। इन आवासीय बस्तियों में स्वतंत्रता के लिए आंदोलन आरंभ हो गए। इन आंदोलनों ने यूरोपीय राष्ट्रों के वर्चस्व के सम्मुख बड़ी चुनौती दी।

प्रथम विश्वयुद्‌ध के बाद शांति प्रस्थापित करने हेतु राष्ट्रसंघ का निर्माण हुआ। परंतु राष्ट्रसंघ युद्‌ध रोकने में सफल नहीं रहा। जर्मनी, इटली, स्पेन आदि देशों में तो तानाशाही शासन व्यवस्था अस्तित्व में आई। इन सभी घटनाओं की परिणति द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध में हुई।

प्रथम विश्वयुद्‌ध में सहभागी भारतीय सैनिक

**विचार करें और लिखें ।**

जर्मनी में हिटलर की तानाशाही का उदय हुआ। जर्मनी की लोकतांत्रिक परंपरा मजबूत होती तो क्या हुआ होता? तानाशाही शासन व्यवस्था अस्तित्व में न आए; इसलिए हमें कौन-कौन-सी सावधानियाँ लेनी चाहिए।

**आपको क्या लगता है ?**

युद्‌ध पर प्रतिबंध लगाने के लिए राष्ट्रसंघ का गठन हुआ, परंतु युद्‌ध रोकने में राष्ट्रसंघ विफल रहा। राष्ट्रसंघ को युद्‌ध टालने हेतु कौन-सी उपाय योजना करनी चाहिए थी?

**द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध :** वर्ष १९३९ से १९४५ के बीच द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध हुआ। प्रथम विश्वयुद्‌ध की तुलना में द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध अधिक संहारक सिद्‌ध हुआ। वह अधिक व्यापक तो था ही; परंतु इस युद्‌ध में अधिक उन्नत तकनीकी का उपयोग किया गया था। युद्‌ध में सहभागी हुए राष्ट्रों पर फिर एक बार आर्थिक संकट टूट पड़ा।

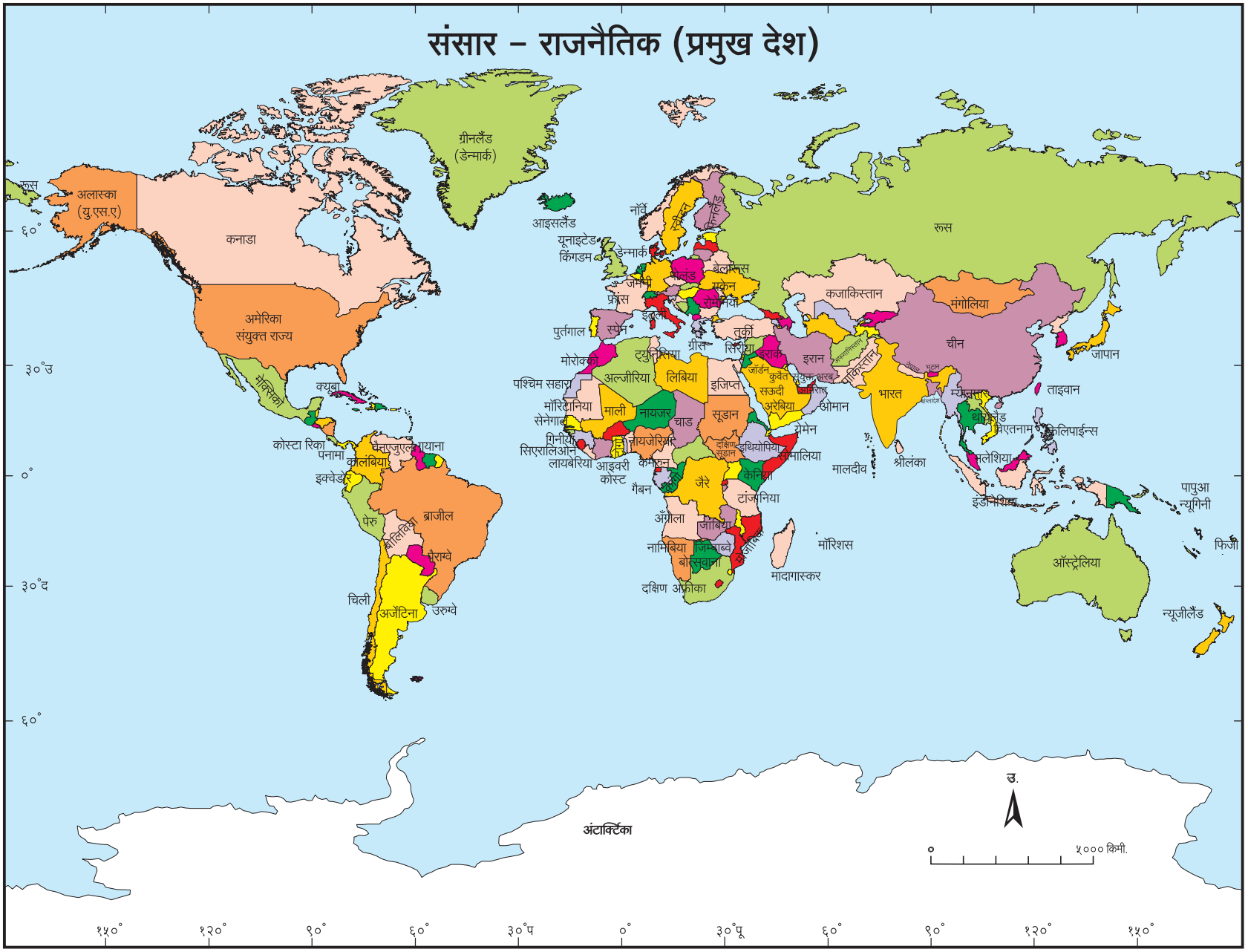

# संसार – राजनैतिक (प्रमुख देश)

**लेखन करें...**

वर्ष १९३९ से १९४५ के बीच द्वितीय विश्वयुद्ध चला। इसी कालावधि में भारत में कौन-सी गतिविधियाँ चल रही थीं।

विश्वयुद्ध का भारत पर का प्रभाव पड़ा?

## द्वितीय विश्वयुद्ध में सहभागी राष्ट्र

| | |
|---|---|
| मित्र राष्ट्र | ब्रिटेन, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, कैनडा, न्यूजीलैंड, भारत, सोवियत रशिया, चीन, अमेरिका |
| अक्ष राष्ट्र | जर्मनी, जापान, इटली |

द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका का महत्त्वपूर्ण सहभाग था। अमेरिका ने अणुबम का निर्माण किया था। युद्ध समाप्त करने के लिए अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा तथा नागासाकी इन दो शहरों पर क्रमशः ६ और ९ अगस्त १९४५ को अणुबम गिराए। यूरोप में जर्मनी की हुई हार के बाद तथा एशिया में जापान की हार के बाद द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के समय में विश्व स्तर पर जो अनेक घटनाएँ घटीं उनमें एक महत्त्वपूर्ण घटना शीतयुद्ध का आरंभ होता है। वर्ष १९४५ ते १९९१ तक का प्रदीर्घ समय शीतयुद्ध से व्याप्त था। इस कालखंड के कुछ परिवर्तनों की हम समीक्षा करेंगे।

**शीतयुद्ध :** दूसरे विश्वयुद्ध में मित्र रहे अमेरिका तथा सोवियत रशिया युद्ध समाप्त होते ही परस्पर प्रतियोगी बन गए। उनके आपसी सहयोग का स्थान प्रतिद्वंद्विता ने ले लिया। यह प्रतिद्वंद्विता वैश्विक राजनीति में ४०-४५ वर्षों तक चलती रही। इन दोनों देशों में प्रत्यक्ष युद्ध नहीं हुआ पर युद्ध की ज्वाला कभी भी धधक सकेगी; इतना तनाव उनके संबंधों में उत्पन्न हुआ था। प्रत्यक्ष युद्ध नहीं पर युद्ध के लिए पूरक जैसी तनावपूर्ण परिस्थिति का वर्णन शीतयुद्ध के रूप में किया जाता है । इस कालावधि में अमेरिका तो महासत्ता थी ही पर सोवियत यूनियन ने भी आण्विक प्रक्षेपणास्त्रों की निर्मिति कर अपनी सैन्य सामर्थ्य बढ़ाकर महासत्ता बनने का प्रयत्न किया। अमेरिका तथा सोवियत संघ इन दो महासत्ताओं का संघर्ष, सत्ता स्पर्धा, शस्त्रस्पर्धा, विचार प्रणाली के बीच के भेद, एक दूसरे को शह और मात देने की वृत्ति; इन सभी बातों के कारण ही शीतयुद्ध शुरू हो गया था।

### शीतयुद्ध के परिणाम

- **सैन्य संगठनों का निर्माण :** शीतयुद्ध की कालावधि में दोनों महासत्ताओं ने सैन्य संगठनों का निर्माण किया। उनमें सम्मिलित होने वाले राष्ट्रों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उन-उन महासत्ताओं ने ली। नाटो (NATO : North Atlantic Treaty Organization) अमेरिका के नेतृत्ववाला सैन्य संगठन था। उसी प्रकार वर्साय समझौता यह सोवियत संघ के नेतृत्व वाला सैन्य संगठन था।

**आपको क्या लगता है?**

- तकनीकी विज्ञान में हुई प्रगति और अंतरराष्ट्रीय शांति इनमें क्या कोई संबंध होता है?
- मानव कल्याण के लिए तकनीकी विज्ञान का उपयोग कैसे किया जा सकेगा?

- **विश्व का द्विध्रुवीकरण :** शीतयुद्ध काल में विश्व के अधिकांश देश दो महासत्ताओं के गुटों में शामिल हुए थे । राष्ट्रों का इस तरह दो गुटों में विभाजन होना अर्थात द्विध्रुवीकरण होना है। इससे शीतयुद्ध का प्रभाव बढ़ गया। तनाव का क्षेत्र फैल गया।
- **शस्त्रास्त्र स्पर्धा :** एक-दूसरे को शह और मात देने के लिए महासत्ता बहुत बड़ी मात्रा

**करके देखिए ।**

क्यूबा का संघर्ष (१९६२) शीतयुद्ध काल की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना थी। इस संघर्ष के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।

**क्या आप जानते हैं?**

वर्ष १९१७ में रूस में साम्यवादी क्रांति हुई और उसी से सोवियत रशिया अस्तित्व में आया। अल्पावधि में ही सोवियत रशिया अंतरराष्ट्रीय राजनीति में महासत्ता के रूप में उभर आया। परंतु अमेरिका और सोवियत रशिया में अतिमतभेद थे। जैसे –

* अमेरिका पूँजीवाद का समर्थन करने वाला लोकतांत्रिक राज्य था, तो सोवियत रशिया समाजवाद और एकपक्षीय तानाशाही का समर्थन करने वाला राज्य था। दोनों महासत्ताओं को विश्व में अपना वर्चस्व बढ़ाना था। अमेरिका को पूँजीवाद का प्रसार करना था तो सोवियत रशिया को समाजवाद का।
* अपना वर्चस्व बढ़े; इस उद्देश्य से दोनों महासत्ताओं ने छोटे राष्ट्रों को अपने-अपने गुट में खींचने के प्रयत्न प्रारंभ किए। परिणामस्वरूप यूरोप का वैचारिक स्तर पर विभाजन हुआ। पश्चिम यूरोप तथा वहाँ के देश अमेरिका के गुट में शामिल हुए तो पूर्व यूरोप के देश सोवियत रशिया के गुट में शामिल हुए। इन महासत्ताओं ने अपने-अपने गुट के राष्ट्रों को सैन्य तथा आर्थिक सहायता देने की नीति स्वीकार की।

में शस्त्रों का निर्माण करने लगे। अधिक से अधिक विध्वंसक प्रक्षेपणास्त्र बनाने के संदर्भ में आवश्यक तकनीकी ज्ञान अवगत करने हेतु प्रतियोगिता प्रारंभ हो गई। किंतु इन प्रक्षेपणास्त्रों की होड़ में वैश्विक शांति खतरे में आ जाएगी; इसका आभास दोनों महासत्ताओं को हो जाने के कारण प्रक्षेपणास्त्रों के नियंत्रण और निरस्त्रीकरण के प्रयास भी इसी समय में हुए।

- **प्रादेशिक संगठनों का निर्माण :** महासत्ताओं की होड़ में विकासशील राष्ट्रों ने एक-दूसरे की सहायता करने के लिए प्रादेशिक स्तर पर संगठनों का निर्माण किया। उन्हें आर्थिक विकास महत्त्वपूर्ण लगता था। यूरोप के देशों ने यूरोपीय आर्थिक संघ का निर्माण किया तो दक्षिण पूर्व एशियाई देशों ने (सिंगापुर, थाइलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, फिलिपींस आदि) एशियन (ASEAN) संगठन का निर्माण किया।
- **गुटनिरपेक्षतावाद :** शीतयुद्ध की शुरुआत हो जाने पर उस कालावधि में एक ओर विश्व का द्विध्रुवीकरण हो रहा था पर उसी के साथ-साथ कुछ देशों को महासत्ताओं की स्पर्धा में सम्मिलित नहीं होना था। ऐसे राष्ट्रों ने महासत्ताओं की स्पर्धा से दूर रहने की नीति स्वीकार की, इसे गुटनिरपेक्षतावाद कहते हैं। गुटनिरपेक्षतावाद शीतयुद्ध काल का एक महत्त्वपूर्ण आंदोलन था।

**गुटनिरपेंक्षतावाद आंदोलन :** द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एशिया और अफ्रीका महाद्वीपों में स्वतंत्र हुए नए देशों ने गुटनिरपेक्षता विचार का समर्थन किया। यह एक महत्त्वपूर्ण आंदोलन था। वर्ष १९६१ में भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, युगोस्लाविया के अध्यक्ष मार्शल टीटो, इजिप्त के अध्यक्ष गमाल अब्दुल नासेर, इंडोनेशिया के राष्ट्राध्यक्ष डॉ अहमद सुकार्नो और घाना के राष्ट्राध्यक्ष क्वामे नख्रुमा के नेतृत्व में इस आंदोलन की शुरुआत हुई।

**गुटनिरपेक्षतावादी आंदोलन का मूल्यांकन:** गुटनिरपेक्षतावादी आंदोलन ने उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और वंशवाद का विरोध किया है। इस आंदोलन ने अंतरराष्ट्रीय समस्याओं को शांतिपूर्ण मार्ग से हल करने को प्रोत्साहन दिया है। पंडित जवाहरलाल नेहरू के मार्गदर्शन में भारत ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। बाद के काल में भी इस आंदोलन को भारत ने

सक्रिय समर्थन दिया है। शीतयुद्ध समाप्त हो जाने पर भी इस आंदोलन का महत्त्व कम नहीं हुआ।

गुटनिरपेक्षतावादी आंदोलन मानवतावाद, वैश्विक शांति तथा समानता जैसे शाश्वत मूल्यों पर आधारित है। इस आंदोलन ने अल्पविकसित राष्ट्रों को एकत्रित होने के लिए प्रेरित किया है।

शांतिमय मार्ग से अंतरराष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करने हेतु इस आंदोलन ने प्रोत्साहन दिया। निरस्त्रीकरण, मानवाधिकारों का संवर्धन के संबंध में आग्रहपूर्ण भूमिका अपनाते हुए गुटनिरपेक्षतावादी आंदोलन ने गरीब तथा अविकसित राष्ट्रों की समस्याएँ दृढ़ता के साथ रखीं। आंदोलन ने एक नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था (NIEO) की माँग की।

संक्षेप में कहा जाए तो शीतयुद्ध समाप्त हो जाने के बाद भी गुटनिरपेक्षतावादी आंदोलन का महत्त्व कम नहीं हुआ। इस आंदोलन ने अल्पविकसित राष्ट्रों को एकत्र आने के लिए प्रेरित किया। इस आंदोलन ने आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के अनेक वैचारिक प्रवाह अंतरराष्ट्रीय राजनीति में लाए। इन राष्ट्रों को अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सम्मान के साथ खड़े होने का एक नया विश्वास दिया।

**शीतयुद्ध का अंत :** वर्ष १९४५ से वैश्विक राजनीति में प्रभावशाली रहा शीतयुद्ध बाद में समाप्त हो गया। शीतयुद्ध का अंत पिछली शताब्दी के अंत की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना थी। शीतयुद्ध के समाप्त होने में अनेक बातें जिम्मेदार थीं। जैसे –

(१) सोवियत रशिया ने आर्थिक उदारीकरण की नीति को स्वीकार किया। देश की अर्थव्यवस्था पर लगाए गए नियंत्रण को शिथिल किया।

(२) सोवियत रशिया के तत्कालीन अध्यक्ष मिखाइल गोर्बाचेव ने 'पेरेस्त्रोईका' (पुनर्रचना) और 'ग्लासनोस्त' (खुलापन) नीतियों पर अमल किया। इन नीतियों के कारण माध्यमों पर से नियंत्रण कम हुआ। राजनैतिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए अर्थात इस क्षेत्र में पुनर्रचना की गई। इससे लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा मिला।

(३) पूर्वी यूरोप के सोवियत रशिया के प्रभाववाले देशों द्‌वारा पूँजीवादी और लोकतांत्रिक मार्ग अपनाने के कारण वहाँ की शासन सत्ताएँ बदल गईं।

(४) सोवियत रशिया का विघटन हुआ। फलतः अनेक नए राष्ट्रों का निर्माण हुआ। रूस सोवियत रशिया का बड़ा देश था।

**ऐसा क्यों?**

- नाटो संगठन आज भी अस्तित्व में है,पर उसका स्वरूप अब सैनिकी नहीं है। इस संगठन में कितने देश हैं, खोजिए।

**शब्द सुझाएँ ।**

एक ही महासत्ता होती है तथा उसपर जब अनेक देश निर्भर होते हैं तो उस अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को हम एकध्रुवीय व्यवस्था कहते हैं। दो महासत्ताओं में हुए राष्ट्रों के विभाजन को द्‌विध्रुवीकरण कहते हैं।

जब अनेक देश महासत्ता के रूप में अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में उभरते हैं तब उस व्यवस्था को क्या कह सकेंगे?

'युद्ध में निहित स्वार्थ' इस विषय पर निबंध लिखें। इसके लिए नीचे कुछ मुद्दे दिए हैं। उनपर चर्चा कीजिए।

- कोई भी समस्या चर्चा तथा समझौते से हल की जी सकती है।
- युद्ध के कारण समस्या हल नहीं होती।
- युद्ध के कारण विकास अवरुद्ध होता है।

## शीतयुद्धोत्तर विश्व

सोवियत रशिया के विघटन के साथ शीतयुद्ध समाप्त हुआ। किसी समय महासत्ता रहे इस सोवियत रशिया के विघटन से विश्व की राजनीति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। जैसे –

- वैश्विक राजनीति में अमेरिका ही एकमात्र महासत्ता के रूप में शेष रहा।
- राष्ट्रों में व्यापार और आर्थिक संबंध बढ़ाने के लिए अनुकूल वातावरण निर्माण हुआ। पूँजी, श्रम, बाजार, सूचना इनका विश्व भर में प्रसार हुआ। लोगों में विचारों और कल्पनाओं का भी मुक्त संचार होने लगा।
- सभी राष्ट्रों ने व्यापारिक संबंधों को प्रधानता देने का निश्चय किया जिससे अन्य राष्ट्रों की सहायता करने की कल्पना पिछड़ गई। इसके बदले आर्थिक संबंध प्रस्थापित करने के प्रयास होने लगे। अर्थात पहले अपने किसी विरोधी राष्ट्र को 'शत्रु राष्ट्र' कहा जाता था इसलिए अब उसके बदले 'स्पर्धक राष्ट्र' की अवधारणा सामने आई।
- संयुक्त राष्ट्र संघ की जिम्मेदारी में वृद्धि हुई। वैश्विक शांति तथा सुरक्षा बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्रों को अधिक ठोस प्रयास करने पड़ रहे हैं।
- पर्यावरण की रक्षा, मानवाधिकारों का संरक्षण, स्त्री-पुरुष समानता, प्राकृतिक आपदा का सामना इन मुद्दों को वैश्विक स्वरूप प्राप्त हुआ।

**वैश्वीकरण से क्या तात्पर्य है? :** शीतयुद्ध के बाद व्यापार तथा आर्थिक संबंधों में खुलापन आया। इससे पूर्व कहे अनुसार पूँजी, श्रम, बाजार और सूचनाओं का विश्व भर में संचार होने लगा। विश्व भर के लोगों में विचारों एवं कल्पनाओं का आदान-प्रदान बढ़ गया। सूचना एवं प्रौद्योगिकी में हुई क्रांति से विश्व की घटनाएँ और गतिविधियाँ सुदूर मालूम होने लगीं। देशों की सीमा रेखाओं का पहले जितना महत्त्व नहीं रहा। इन सभी प्रक्रियाओं को वैश्वीकरण कहा जाता है। वैश्वीकरण के जैसे कुछ लाभ हुए हैं वैसे ही कुछ हानियाँ भी हुई हैं। जैसे विविध राष्ट्रों की अर्थ व्यवस्था एक दूसरे से जुड़ जाने से व्यापार बढ़ा, आर्थिक एकत्रीकरण बढ़ा, बाजारों में माल की उपलब्धता बढ़ी; परंतु इसी के साथ-साथ गरीब और अमीर राष्ट्रों के बीच की दूरी कम नहीं हुई।

इस अध्याय में हमने वर्ष १९४५ से वैश्विक गतिविधियों का अध्ययन किया। शीतयुद्धकालीन विश्व, उसकी शस्त्रस्पर्धा तथा निरस्त्रीकरण का प्रयास समझा। वैश्वीकरण के अर्थ का अध्ययन भी किया। अगले अध्याय में हम भारत की विदेश नीति का अध्ययन करेंगे।

**खोजिए और सहभागी हों !**

पर्यावरण रक्षा के लिए किन्हीं दो वैश्विक संगठनों की जानकारी प्राप्त कीजिए। आपको उनके उद्देश्य मान्य हों तो उनमें सहभाग के अवसर कौन-से हैं; यह खोजिए।

## स्वाध्याय

**१. दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए।**

(१) स्वतंत्र व प्रभुत्व संपन्न देशों की मिलकर निर्माण होने वाली व्यवस्था –
- (अ) राजनीतिक व्यवस्था
- (ब) अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था
- (क) सामाजिक व्यवस्था
- (ड) इनमें से नहीं

(२) राष्ट्रसंघ की मुख्य जिम्मेदारी –
- (अ) युद्ध टालना
- (ब) उपनिवेशवाद की स्वतंत्रता
- (क) राष्ट्र की अर्थव्यवस्था संभालना
- (ड) निरस्त्रीकरण करना

(३) ..... इस घटना के कारण शीतयुद्ध समाप्त हुआ।

(अ) संयुक्त राष्ट्र की स्थापना

(ब) सोवियत रशिया का विघटन

(क) सैन्य संगठनों का निर्माण

(ड) क्यूबा का संघर्ष

**२. निम्न कथन सत्य हैं या असत्य कारण सहित स्पष्ट कीजिए।**

(१) प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रसंघ का निर्माण हुआ।

(२) शीतयुद्ध के कारण विश्व का एकध्रुवीकरण हुआ।

(३) मिखाईल गोर्बाचेव की नीतियों के कारण लोकतंत्रीकरण के लिए पोषक वातावरण बना।

**३. निम्नलिखित अवधारणा स्पष्ट कीजिए।**

(१) शीतयुद्ध (२) गुटनिरपेक्षतावाद

(३) परस्परावलंबन (४) द्विध्रुवीकरण

(५) वैश्वीकरण

**४. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।**

(१) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्धों की तुलना कीजिए।

| मुद्दे | प्रथम विश्वयुद्ध | द्वितीय विश्वयुद्ध |
|---|---|---|
| १. कालखंड | | |
| २. सहभागी राष्ट्र | | |
| ३. परिणाम – (राजनीतिक तथा आर्थिक) | | |
| ४. युद्धोत्तर स्थापित हुए अंतरराष्ट्रीय संगठन | | |

(२) शीतयुद्ध का अंत होने के लिए कौन-सी बातें कारण बनीं?

(३) शीतयुद्ध के समाप्त होने के बाद वैश्विक राजनीति में कौन-से महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए?

**उपक्रम**

१. विश्व के विविध राष्ट्र एक-दूसरे पर अवलंबित होते हैं, उदाहरणसहित स्पष्ट कीजिए।

२. समाज में 'वसुधैव कुटुंबकम्' इस मूल्य को स्थापित करने के लिए आप क्या करने वाले हैं; इसकी कक्षा में चर्चा कीजिए।

7HV6SH